विवाह पूजा के लिए सही मुहूर्त का चयन

विषयसूची

विवाह पूजा के लिए सही मुहूर्त का चयन 3
परिचय.. 3
प्रमुख ज्योतिषीय कारक 3
1. तिथि (चंद्र तिथि) 3
2. नक्षत्र 3
3. वार (सप्ताह का दिन).. 3
4. योग और करण 3
5. लग्न 4
6. सौर मास और सूर्य का राशि संक्रमण 4
7. निषिद्ध अवधियाँ 4
8. राहु, गुलिक और यमगंड 4
मुहूर्त चुनने के व्यावहारिक कदम 4
अतिरिक्त सुझाव.. 5
लेखक परिचय 5
अस्वीकरण / डिसक्लेमर 6

विवाह पूजा के लिए सही मुहूर्त का चयन

परिचय

मुहूर्त किसी भी वैदिक अनुष्ठान के लिए सबसे शुभ समयखंड होता है। विवाह पूजा के लिए "सही" मुहूर्त चुनने का अर्थ है चंद्र और सूर्य सम्बन्धी कारकों, ग्रहों की स्थिति और वर-वधु की जन्मकुंडलियों का समन्वय ताकि वैवाहिक जीवन में सौहार्द, समृद्धि और दीर्घायु बनी रहे।

प्रमुख ज्योतिषीय कारक

1. तिथि (चंद्र तिथि)

- शुभ: द्वितीया, तृतीया, पंचमी, सप्तमी, दशमी, एकादशी, त्रयोदशी
- अशुभ: अमावस्या, पूर्णिमा, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी

2. नक्षत्र

- शुभ: रोहिणी, मृगशिरा, मघा, उत्तर फाल्गुनी, हस्त, स्वाति, अनुराधा, मूल, उत्तराषाढा, उत्तरभाद्रपदा, रेवती
- अशुभ: भरणी, कृत्तिका, आश्लेषा, ज्येष्ठा, धनिष्ठा, शतभिषा

3. वार (सप्ताह का दिन)

- शुभ: सोमवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार
- परहेज करें: रविवार, मंगलवार, शनिवार

4. योग और करण

- अशुभ योग: व्यतीपात, वैधृति, परिघ, विश्कुम्भ
- प्रतिबंधित करण: विष्टी, शकुनि, चतुष्पाद, नागव
- शुभ करण: किन्नस्तुघ्न, बव, बलव, कौलव, तैतिल, गरज, वणिज

5. लग्न

मुहूर्त के समय उठता हुआ लग्न सुदृढ़ होना चाहिए और किसी भी प्रकार की प्रकोपकारी दृष्टि से मुक्त होना चाहिए। सातवें भाव (विवाह भाव) की स्थिति अच्छी हो और वह ग्रहदोषों से मुक्त हो।

6. सौर मास और सूर्य का राशि संक्रमण

- अनुमान्य स्वीकार्य राशि: मेष, वृषभ, मिथुन, वृश्चिक, मकर, कुंभ
- परहेज करें जब सूर्य हो: कर्क, सिंह, कन्या, तुला, धनु, मीन या चतुर्मास (विष्णु के चार माह के विश्राम के समय)

7. निषिद्ध अवधियाँ

अधिक मास, क्षय मास, चतुर्मास, पितृ पक्ष / महालया श्राद्ध जैसी अवधियाँ विवाह मुहूर्त के लिए निषिद्ध मानी जाती हैं।

8. राहु, गुलिक और यमगंड

चुने हुए मुहूर्त के अंदर भी राहु, गुलिक या यमगंड के शासित क्षणों से बचें क्योंकि ये अस्थिरता और अड़चने लाते हैं।

मुहूर्त चुनने के व्यावहारिक कदम

1. प्रस्तावित तिथि का पंचांग देखें और तिथि, नक्षत्र, योग, करण और वार की पुष्टि करें।
2. वर-वधु की जन्मकुंडलियों की जांच कराएं ताकि चुने हुए मुहूर्त पर कोई बड़ा दोष या ग्रहगत संघर्ष न हो।
3. सभी निषिद्ध अवधियों को बाहर करें (चतुर्मास, पितृपक्ष, अधिक/क्षय मास)।
4. राहु, गुलिक, यमगंड से मुक्त 2–3 घंटे के छोटे-छोटे समय-खिड़कियाँ पहचानें।

5. अंतिम निर्णय किसी प्रमाणित वैदिक पुरोहित या ज्योतिषाचार्य से सलाह लेकर लें।

अतिरिक्त सुझाव

- तिथियों को संकीर्ण करते समय स्थान की उपलब्धता और अतिथियों की सुविधा का ध्यान रखें।
- मुहूर्त से ठीक पहले गणेश पूजा या गणपति स्थापना जैसी अनुष्ठानिक क्रियाएँ करें ताकि आशीर्वाद सुनिश्चित हों।
- किसी अचानक कैलेंडर परिवर्तन (जैसे अपेक्षित न हो ऐसी अमावस्या या ग्रहण) के लिए बैकअप मुहूर्त जरूर रखें।

चंद्र तिथियों, नक्षत्रों, योग-करणों, सौर संक्रमणों और ग्रहकालों के सूक्ष्म समन्वय से आप एक शक्तिशाली ऊर्जा-आधार तैयार कर सकते हैं जो वैवाहिक जीवन के लिए टिकाऊ शुभारम्भ बनता है।

---

*ब्लॉग के टिप्पणियों में अपने अनुभव और कहानियाँ साझा करें ताकि हम एक-दूसरे को प्रेरित कर सकें और सहायक समुदाय बना सकें।

लेखक परिचय

राजेश पाठक एक द्विभाषी आध्यात्मिक लेखक और अनुष्ठान दस्तावेजीकार हैं जो पारिवारिक पूजा-पद्धतियों के लिए सुलभ मार्गदर्शिकाएँ बनाते हैं। वे पवित्र समारोहों का अनुवाद और प्रायोगिक सुझाव तैयार करने में विशेषज्ञ हैं ताकि परम्परा का सम्मान और सामंजस्य बना रहे। उनका तकनीकी लेखन और सांस्कृतिक अध्ययन का अनुभव सुनिश्चित करता है कि प्रत्येक अनुष्ठान प्रामाणिकता और स्पष्टता के साथ प्रस्तुत हो।

अस्वीकरण / डिसक्लेमर

इस विषय-वस्तु को Microsoft Copilot नामक एआई-सहायक की मदद से तैयार किया गया है जो मानव रचनात्मकता को स्पष्टता, सटीकता और प्रभाव के लिए बढ़ाता है। कुछ दृश्य सामग्री भी एआई सहायता से बनाई गई थी ताकि विचार स्पष्ट हों और प्रस्तुति रोचक रहे। हम सटीकता का प्रयास करते हैं पर एआई टूल कभी-कभी त्रुटियाँ कर सकता है। यह सामग्री केवल जानकारी हेतु है।